भूमिका

हिन्दी का आधुनिक काल साहित्यिक दृष्टि से बहुआयामी है । इस युग में साहित्य की सभी विद्याओं का चहुमुखी विकास हुआ है । गद्य में जहाँ एक ओर नई–नइ विद्याओं का उदभव और विकास हुआ वहाँ पद्य – विद्या भी द्रुतगति से विकसित हुयी । काव्य – प्रवृत्तियाँ युग – चेतना के साथ – साथ बदलती रहीं हैं। छायावाद के बाद के काव्य में यह प्रवृत्तिगत विकास बहुत ही दिलचस्प है । यदि यह कहा जाए कि छायावादोत्तर काव्य अपनी प्रवृत्तियों में गद्योन्मुखी होता गया है तो कोइ अतिशयोक्ति नहीं होगी । यथार्थवाद, मनोविश्लेष्णवाद, कुण्ठा, हताशा, विषाद आदि की प्रवृत्तियाँ समान रूप से गद्य – पद्य में विकसित देखने में आती हैं । भाषा का रूप भी दूर की कौड़ी लाने के चक्कर में दुरूह होता गया है । परन्तु इस युग में कुछ ऐसे साहित्यकार भी उभरे हैं जिनमें कविता के प्रकृत रूप के दशन होते हैं । भवानी प्रसाद मिश्र, त्रिलोचन शास्त्री आदि ऐसे ही कवि हैं जिन्होंने सहज भाषा में अपने मनोगत भावों को वाणी दी है ।

त्रिलोचन शास्त्री न केवल सहज भाषा के कवि हैं । अपितु उनका उदार हृदय साहित्य में नये – नये प्रयोगों के लिए भी उदार रहा है । उन्होंने हिन्दी में आंग्ल साहित्य की एक विद्या सॉनेट को ग्रहण कर उसे हिन्दी का ही काव्य रूप बना लिया है ।

मैंने अपने एम.फिल. के लिए त्रिलोचन के इसी काव्य रूप को ग्रहण किया है । त्रिलोचन से पहले यद्यपे इस विद्या के बिखरे – तुखरे प्रयोग छायावाद में प्रसाद आदे ने किये हैं । पर त्रिलोचन ने इसे विकास की ऐसी शिखरों पर पहुँचाया है कि त्रिलोचन सॉनेट के पर्याय ही बन गये हैं । हमनें इसे एम.फिल. शोध का विषय बनाया है ।

प्रस्तुत अध्ययन का प्रथम अध्याय "त्रिलोचन शास्त्री – जीवन परिचय" से सम्बान्धित है जिसमें उनके जीवन वृत्त, व्यक्तित्व और कृतित्व पर विमर्श हुआ है ।

Maulana Azad Library, Aligarh Muslim University

अध्ययन के दूसरे अध्याय में चतुर्दशपदी स्वरूप विश्लेषण से सम्बान्धित है जिसमें चतुदशपदी का स्वरूप, चतुर्दशपदी काव्य के विधायक तत्व, वर्गीकरण इतालवी और आंग्ल चतुदशपदी रूप, पाश्चात्य साहित्य और चतुर्दशपदी एक अन्तयोत्रा, आधुनिक हिन्दी कविता में चतुदशपदी सवेक्षण आदि पर विचार किया है ।

तीसरा अध्याय "त्रिलोचन का चतुदशपदी काव्य वस्तु परीक्षण"।

प्रबन्ध के चतुर्थ अध्याय में "त्रिलोचन का चतुर्दशपदी काव्य शिल्प सौष्ठव" पर विचार किया गया है जिसके अन्तर्गत भाषा, अलंकार, विम्ब एवं प्रतीक, मुहावरे, छंद विधान, शैली की गवेषणा की गयी है ।

पंचम अध्याय "उपसंहार – चतुर्दशपदीकार त्रिलोचन का प्रदेय" पर विचार किया गया है ।

इस अवसर पर मुझे आभार प्रदेशन की आवश्यकता की सुखद अनुभूति हो रही है जिनके श्री चरणों में बैठकर मुझे अपने एम.फिल. के शोध प्रबन्ध को लिखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है । उनका औदार्य और अनुजावत स्नेह कदापि भुलाने की वस्तु नहीं है । अतः मैं उन्हें धन्यवाद न देकर उनके प्रति मूक कृतज्ञता ज्ञापित करती हुयी उनके आशीवोद की ही कामना करती हूँ ।

विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर मिश्रा जी के प्रति मैं हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ जिनका व्यवहार हम शोधार्थियों के प्रति सदैव उत्साहवधेक रहा है ।

प्रोफेसर शैलेश जैदी सदाइमें कार्य के प्रति तत्पर रहने के लिए उत्साहित करते रहे । उनके प्रति मैं अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ ।

डॉ. उदयशंकर श्रीवास्तव, डॉ. रमेश चन्द्र, अजब सिंह, और विभागीय विद्वानों के प्रति आभार व्यक्त करना मैं अपना पुनीत कतेव्य समझती हूँ जिन्होंने समय समय पर अपनी सत्प्रेरणा से मेरा उत्साहवधेन किया है ।

मैं डॉ. मुहम्मद उस्मान खाँ, सेमीनार इंजाच, हिन्दी विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वावेद्यालय का शुक्रिया किस प्रकार अदा करूँ, जिन्होंने मुझे तत्परता से किताबें उपलब्ध करायीं ।

Maulana Azad Library, Aligarh Muslim University

विभाग के कार्यालय में कार्यरत सईद भाई, परवेज आपा, रामजीलाल भाई और सभी जो कार्य करते हैं उनके प्रति मैं अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करना अपना धर्म समझती हूँ जिन्होंने समय समय पर मेरा अनेक प्रकार से उपकार किया है ।

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय की आजाद लाइब्रेरी के हिन्दी सैक्शन के भाई सय्यद राकेम अली के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने मुझे पुस्तकों को सहयोग दिया । मैं उनका बडे भाई के रूप में सदा आदर के साथ स्मरण करती हूँ ।

जिन रचनाओं से मुझे शोध प्रबन्ध की सामग्री प्राप्त हुयी है उन रचनाकारों के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ ।

मैं आभारी हूँ अपने मामा श्री सरदार अहमद खान और पिता श्री अब्दुल शाहिद खान जिनकी अपरिमित प्रेरणा और मार्गदर्शन ने मुझे जीवन – सत्य को समझकर संघर्ष करने की क्षमता और ऊर्जा से आपूरित किया । उन्हीं की प्रेरणा से ये मेरा शोधकार्य सम्भव हो सका । मैं उनके श्री चरणों में बार – बार नमन करती हूँ ।

एम.फिल. शोधकार्य में मुझे पूज्य मामीजी श्रीमती रेहाना बेगम और पूज्य माता श्रीमती अतुफा बेगम का असीम स्नेह निरन्तर कार्य करने के लिए प्रेरणा प्रदान कर प्रोत्साहित करता रहा है । उन्होंने अपने आदर्श उत्तरदायित्वों का जिस सहज तथा सफल ढंग से निर्वाह किया है वह अनुकरणीय और चिरस्मरणीय है । मैं श्रद्धाभाव से उनके प्रति नतमस्तक हूँ । उनका शुभाशीष मुझ पर सदैव बना रहे ।

मैं अपने पति श्री मो. शुऐब खान के प्रति श्रद्धावनत हूँ जिन्होंने शोधकार्य के लिए घर गृहस्थी की सभी प्रकार के उत्तर दायित्वों से मुक्त कर अवसर प्रदान किया । मैं उनके प्रति सदैव मूक कृतज्ञता ज्ञापित करती रहूँगी ।

मैं अपनी बेटी फारदा, छोटी बहन शीबा, जेबा, उन सभी पारिवारीजनों, मित्रों एवं स्नेहियों की कृतज्ञ हूँ जिन्होंने प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से इस शोधकार्य में सहयोग किया है ।

अन्त में मैं परमपिता परमात्मा के प्रति नमस्कार पूर्वक अपने वक्तव्य को समाप्त करती हूँ और शोध प्रबन्धक को परीक्षण हेतु प्रस्तुत करती हूँ ।

शोधार्थी

श्रीमती इफ्फत नाज़ खान

Maulana Azad Library, Aligrh Muslim University